उपसंहार

उपसंहार --

डॉ.देवेश ठाकुर आज हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकारों एवं समीक्षकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनके पास दूरगामी दृष्टि है और उनका लेखन सामाजिक चेतना से संपृक्त है। समकालीन रचनाकारों में देवेशजी का नाम अज्ञात एवं अपरिचित नहीं है। समीक्षा क्षेत्र के साथ-साथ कृति लेखन में भी उन्होंने अपने निश्चित प्रगतिशील और वस्तुपरक दृष्टिकोण से एक ओर अनेक विवादों को आमंत्रित किया है, दूसरी ओर ख्यातिप्राप्त विद्वानों में प्रशंसा भी अर्जित की है। इस प्रकार अपने विविधमुखी और खासकर उपन्यास लेखन के माध्यम से उन्होंने अपनी रचनाधर्मी दृष्टि को सफलता के साथ प्रतिष्ठित किया है।

देवेश जी की: रचनाओं में उनके जीवन की कई घटनाओं का प्रतिबिंब दिखाई देता है। ` प्रमभंग ` में अध्यापक देवेश जी की आत्मा की आवाज है। उनकी जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। अपनी कैंसर ग्रस्त साली के मृत्यु के बाद उसी के जीवन पर उन्होंने जनगाथा` नामक उपन्यास लिखा है। उनकी कविता में भी उनके युवावस्था के दिनों का विवरण मिलता है। नि:संदेह देवेशजी के साहित्य में उनके जीवन का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

` इसीलिए` देवेश ठाकुर का डायरी और पत्रात्मक शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। शिल्प की नवीनता,भाषा की सुंदरता और इसके कथानक की सामाजिकता के कारण ` इसीलिए` उपन्यास उपन्यास जगत में अपना स्वतंत्र स्थान रखता है। इसीलिए उपन्यास का वस्तु-विधान कलात्मक नजर आता है। उपन्यास के तत्वों का इसमें पूरी तरह निर्वाह हुआ है।यह सारा कथानक आरंभ ,विकास, चरमसीमा ,संघर्ष तथा अवरोह से होकर` अंत ` तक पहुँचता है। कथानक का आरंभ उस बिंदू पर हुआ है जिस बिंदू में मनोरंजन के जेल में होने की घटना को दर्शाया है। कथानक के विकास में मनोरंजन माँ ,पिता तथा मीनाक्षी के जीवन से संबंधित

घटनाओं को उद्घाटित किया है । प्रस्तुत उपन्यास में चरमसीमा वाली स्थिति वहीं पर दृष्टिगोचर होती है जहाँ पत्नी चंद्रा द्वारा उपन्यास का नायक मनोरंजन को हत्यारा कहा जाता है । कथावस्तु में अवरोह वहाँ पर नजर आता है जहाँ चंद्रा की मौत हो जाती है । आदिवासी गाँव सीकरबेडी के माहौल में प्रस्तुत उपन्यास का ` अंत ` वाला बिंदू परिलक्षित होता है ।

` इसलिए ` उपन्यास के शीर्षक को देवेश ठाकुर जी ने सार्थक बना दिया है । उपन्यास का शीर्षक जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला ,केंद्रीय भावनाओं को प्रकट करनेवाला और चमत्कार पूर्ण है । सुख की सुविधाओं से संपन्न मनोरंजन अपने जीवन में सुखी नहीं बन सका ।इसीलिए अपनी दृष्टि को व्यापक बनाकर आदिवासियों की सेवा करने लगा । तब उसे अपना जीवन सार्थक लगता है । इसीलिए प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक उचित और सार्थक लगता है ।

प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों में महानगर की यथार्थता दिखाई देती है । उपन्यास के प्रत्येक पात्र की क्रियाएँ,उनका व्यवहार,उनके चरित्र-पक्ष का गठन आदि नियोजित करके पूर्ण स्वाभाविक बना दिया है । मीनाक्षी तथा मनोरंजन के चित्रण में सजीवता, स्वाभाविकता तथा यथार्थता का सफल चित्रण हुआ है । मनोरंजन पिता के मृत्यु के बाद माँ के, चंद्रा के तथा मीनाक्षी के साथ रुपयों के बल पर सुखी रहना चाहता है । मीनाक्षी की माँ के मृत्यु के बाद अंकल मीनाक्षी को सहारा देकर उस पर बलात्कार करते है । तब से वह वेश्या बनती है । वह वेश्या बनी नहीं उसे उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर वेश्या बनाया गया । चंद्रा शादी के पश्चात अपने जीवन साथ मनोरंजन का जीवन भी नरक बना देती है । अपनी माँ को ढूँढना मनोरंजन का कर्तव्य था, लेकिन वह नहीं ढूँढता । मनोरंजन की माँ के कारण ही तीनों (मनोरंजन की माँ,पिता,मनोरंजन) का जीवन बरबाद हो जाता है । उपन्यास का प्रत्येक पात्र सजीव लगता है । परिस्थितियों से हर एक पात्र प्रभावित होता दिखाई देता है । उपन्यास के सभी पात्र कल्पना की सृष्टि नहीं है बल्कि इनका चयन महानगर के यथार्थ जीवन से किया गया है ।

प्रस्तुत उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने परिवेश की एक-एक समस्या को प्रस्तुत करता है । उपन्यास में महानगरीय प्रशासनीय तथा आदिवासियों की समस्याएँ मिलती हैं । लेखक ने प्रमुखत: तीन प्रकार की समस्याओं को रुपायित किया है । देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास में सिर्फ व्यापक दृष्टि बनाकर ही जीने के लिए नहीं कहते बल्कि महानगरीय मुख्य समस्याओं में मुख्य रूप से यौन-संबंध समस्या, वेश्या समस्या, झोपडपट्टी समस्या तथा बीमारियों की समस्या जैसी अन्य समस्याओं की ओर भी संकेत करते है । प्रशासनीय समस्याओं में मुख्य रुप से भ्रष्ट शासन व्यवस्था धन की समस्या, भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था तथा अंधा कानून जैसी समस्याओं का चित्रण मिलता है । आदिवासी समस्याओं में लेखक ने आदिवासियों की पेट की समस्या, मकान की समस्या, कपडे की समस्या, बल्ब की समस्या, मजदूरी की समस्या, आर्थिक समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है ।

डॉ. देवेश ठाकुर मार्क्सवादी उपन्यासकार साबित होते हैं । उनकी दृष्टि से आज आदमी गाँधीवादी विचारों से जी नहीं सकता । एक गाल पर तमाचा मारने पर दूसरा गाल आगे करने का जमाना आज नही है । इसीलिए मैं मनोरंजन गाँधीवादी विचारों का त्याग करके अंत में वह मार्क्सवादी विचार अपना कर जीने लगता है और आदिवासियों को भी उसी तरह जीने की सलाह देता है । उपन्यास के अंत में सीकरखेडी में मनोरंजन में परिवर्तन होता है । अंत में उसे अपना जीवन सार्थक महसूस होता है । उद्देश्य की दृष्टि से यह उपन्यास बहुत ही सफल बना हुआ है । लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सुख की सुविधाओं से संपन्न व्यक्ति को अगर सुखी रहना है तो उसे अपनी दृष्टि को व्यापक बनाकर ही जीना चाहिए ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे । अध्ययन के उपरांत उनके निष्कर्ष इस तरह निकले हैं ।

१) ` इसीलिए उपन्यास में मनोरंजन को प्रमुख पात्र बनाकर उपन्यास की रचना की है। मनोरंजन का नायक होने पर भी वह पाठकों को प्रभावित नहीं करता। प्राय: किसी भी उपन्यास का नायक उपन्यास को गति देकर उसमें रोचकता बढाता है। लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में इसके नायक के चरित्र-चित्रण में कहीं भी रोचकता नजर नहीं आती। मीनाक्षी दलाल एक ऐसा पात्र है जो उपन्यास में कम समय तक उपस्थित रहकर भी पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। मीनाक्षी स्वयं वेश्या नहीं बनती अंकल के कारण उसे वेश्या बनना पडता है। वेश्या बनने पर भी उसका आकर्षण कम नहीं होता बल्कि बढता ही जाता है। वह गजब की खूबसूरत युवति होने से पाठकों को प्रभावित करती है। लेखक ने उसकी जीवन की वास्तविकता को स्पष्ट किया है। असल में मीनाक्षी ही उपन्यास में प्रभावी पात्र है।

२) ` प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने प्रधानत: तीन प्रकार की समस्याओं को रूपायित किया है --

१) महानगरीय समस्याएँ।

२) प्रशासनीय समस्याएँ।

३) आदिवासी समस्याएँ।

महानगरीय समस्याओं में मुख्य रूप से वेश्या समस्या, यौन-संबंध समस्या, होटल समस्या, झोपडपट्टी समस्या, बीमारियों की समस्या आदि समस्याएँ हैं। प्रशासनीय समस्याओं में मुख्य रूप से भ्रष्ट प्रशासन, धन की समस्या, कानून व्यवस्था, भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था आदि समस्याएँ हैं। आदिवासी समस्याओं में लेखक ने आदिवासियों की पेट की समस्या, मकान की समस्या, काम की समस्या, बल्ब की समस्या, महाजनी आतंक की समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

३) ` डॉ.देवेश ठाकुर मार्क्सवादी उपन्यासकार साबित होते हैं । प्रस्तुत उपन्यास में मनोरंजन को नायक बनाया है । उपन्यास का उद्देश्य वे उसी के द्वारा स्पष्ट कराते हैं । अपनी दार्शनिकता लेखक ने उसी के माध्यम से व्यक्त की है । मार्क्सवाद आत्मा,अनात्मा,ब्रह्म,जीव इन बातों को नहीं मानता । आज की दुनिया में आदमी गाँधीवादी तत्वों से जी नहीं सकता । इसीलिए उसे मार्क्सवादी तत्वों के अनुसार जीना पडेगा ऐसा लेखक का कहना है । प्रस्तुत उपन्यास में मार्क्स का दर्शन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ।

देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य परिस्थिति की उपज है । लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में राजनीति,पत्रकारिता,भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था,अंधा कानून,भ्रष्ट शासन व्यवस्था को एकदम नंगा कर दिया है । यहाँ तक की उन्होंने भारतीय संविधान पर भी प्रहार किया है ।महानगर में तथा समाज में व्याप्त वास्तविकता को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में निर्भयता से व्यक्त किया है । भारतीय संविधान की कमियाँ तथा उससे लाभ उठाने वाले राजनीतिज्ञों एवं भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था को उन्होंने बेनकाब किया है ।

अनुसंधान की नई दिशाएँ --

डॉ.देवेश ठाकुर ऐसे उपन्यासकार है,जिन्होंने अपने उपन्यासों में वर्तमान व्यवस्था में आए बहु आयामी परिवर्तन को व्याख्यायित किया है । अत: उनका उपन्यास साहित्य वर्तमान व्यवस्था की उपज है । इस दृष्टि से उनके समग्र उपन्यासों को लेकर --" वर्तमान समाज व्यवस्था के संदर्भ में देवेश ठाकुर के उपन्यासों का अनुशीलन" ; मार्क्सवाद के संदर्भ में देवेश ठाकुर के उपन्यासों का अनुशीलन" विषयों पर शोध-कार्य किया जा सकता है । भविष्य में शायद कोई शोधार्थी यह कार्य संपन्न करें और शायद वह शोधार्थी मुझे ही बनना पडे ।